मुहम्मद बिन तुगलक - सुधार योजना

दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों में सबसे अधिक विवादास्पद व्यक्तित्व का सुल्तान मुहम्मद - बिन - तुगलक था। उसके शासनकाल में अनेक नई योजनाएँ बनाई गई, अनेक सैनिक अभियान हुए। इसके साथ-साथ अनेक विद्रोह हुए एवं साम्राज्य का विघटन आरंभ हुआ। तुगलक बौद्धिक एवं सैनिक गुणों का स्वामी था। गयासुद्दीन की मृत्यु के पश्चात 1325 ई० में वह मुहम्मद तुगलक के नाम से दिल्ली के गद्दी पर बैठा।

मुहम्मद - बिन - तुगलक का शासन काल उसके द्वारा आरंभ की गई नई विवादास्पद योजनाओं के लिए विख्यात है। ये योजनाएँ थी नई राजधानी के रूप में दौलताबाद का चयन, सांकेतिक मुद्रा चलाना, अकाल एवं राहत कार्य की व्यवस्था, दोआब में राजस्व की दर में वृद्धि तथा कृषि - विस्तार की योजना। उसने कराचिल और खुरासान विजय की योजना भी बनाई, परंतु इनमें अधिकांश विफल रहीं।

① राजधानी परिवर्तन :→

तुगलक की नई योजनाओं में सर्वप्रथम महत्वपूर्ण है सल्तनत की राजधानी का दिल्ली से 'दौलताबाद स्थानांतरण'। इस योजना का अनेक कारण थे। दिल्ली पर मंगोलों के आक्रमण का भय सदैव बना रहता था। दौलताबाद साम्राज्य के मध्य में था। वहाँ राजधानी बनने से दक्षिण भारत पर अधिक प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित किया जा सकता था। देवगिरी को राजधानी बनाने से वहाँ मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि हो सकती थी तथा

Scanned with CamScanner

मुस्लिम संस्कृति का विकास हो सके। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सुल्तान ने 1324 ई० में दिल्ली निवासियों को दौलताबाद जाने का निर्देश दिया। अनेक समकालीन विवरणों के अनुसार सुल्तान के आदेश पर समस्त दिल्लीवासी अपने सामानों के साथ दौलताबाद प्रस्थान कर गए जिसके फलस्वरूप पूरा नगर उजाड़ और वीरान हो गया। मार्ग की कठिनता के कारण देवगिरी पहुँचने के पूर्व ही अनेक व्यक्ति मौत के मुँह में चले गए। दौलताबाद पहुँच कर सुल्तान को यह बात समझ में आई कि वहाँ से सम्पूर्ण साम्राज्य पर नियंत्रण स्थापित नहीं किया जा सकता है। अतः उसने पुनः दिल्ली वापस लौटने का निर्देश जारी किया। इससे उसकी बदनामी हुई और प्रजा में असंतोष बढ़ने लगा। इसके बावजूद अपने इस कार्य द्वारा तुगलक ने उत्तर और दक्षिण भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक एकीकरण का प्रयास किया।

(2) सांकेतिक मुद्रा :→

मुहम्मद बिन तुगलक ने जो एक अन्य विवादास्पद कार्य किया वह था सांकेतिक मुद्रा जारी करना। सुल्तान ने सांकेतिक मुद्रा का चलन आरंभ करने के पूर्व ही प्रचलित मुद्रा व्यवस्था में अनेक सुधार किए थे। इतिहास कार बरनी के अनुसार सुल्तान ने नए प्रयोग करने की इच्छा से प्रेरित होकर, राजकोष में धन की कमी होने तथा सैनिक अभियानों के लिए अधिक धन की आवश्यकता के बाध्य होकर सांकेतिक मुद्रा चलाया। उसके सामने ईरान और चीन का उदाहरण था जहाँ

सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन किया जा चुका था। इसलिए उसने चाँदी के टंको के स्थान पर ताँबे के सिक्के जारी करने का आदेश दिया। इससे खजाने में चाँदी सुरक्षित हो जाती। 1329 ई० में एक आदेश जारी कर ताँबे के बने सिक्के चलाने की व्यवस्था की गई। दुर्भाग्यवश सुल्तान की यह योजना भी विफल हो गई। लोगों ने चाँदी के सिक्के जमा करने आरंभ कर दिए। क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इस धातु की कमी के कारण इसका मूल्य लगातार बढ़ रहा था। ताँबे के सिक्के ढलवाने पर नियंत्रण नहीं रहने के कारण जाली सिक्के बड़ी मात्रा में बाजार में आ गए। इससे इसकी विश्वसनीयता समाप्त हो गई। बाध्य होकर ताँबे के सिक्कों को बंद करवा दिया इसके बदले चाँदी के सिक्के जनता को दिए। इससे राज्य को अधिक नुकसान हुआ।

(3) दोआब में राजस्व की दर में वृद्धि :→

मुहम्मद-बिन-तुगलक ने प्रचलित राजस्व व्यवस्था में कई परिवर्तन किया लगान वसूलने वाले कर्मचारियों पर नियंत्रण रखा। सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य था दोआब में प्रचलित राजस्व की दर में वृद्धि करना। दोआब में उपज अधिक थी सुल्तान ने लगान की दर में 1/10 से 1/20 प्रतिशत की वृद्धि की गई। लगान वसूलने वालों को निर्देश दिए गए कि वे कड़ाई से कर की वसूली करें इसी समय दोआब में सूखा पड़ा जिससे किसानों की स्थिति खराब हो गई। फलतः

किसानों और जमींदारों ने लगान वृद्धि का विरोध किया। किसानों ने खेती करनी छोड़ दी, खड़ी फसलों को जला दिया एवं सरकारी गोदामों को लूट लिया। सरकार ने सख्ती से विद्रोह को दबाया। हजारों व्यक्ति मारे गए। यद्यपि सुल्तान ने किसानों को राहत पहुंचाने एवं कृषि को प्रोत्साहन देने का प्रयास किया था।

(4) खुरासान एवं कराचिल विजय की योजनाएँ :→

मुहम्मद बिन तुगलक एक महत्वाकांक्षी एवं सैनिक गुणों से परिपूर्ण सुल्तान था। वह मध्य एशिया में उत्पन्न राजनीतिक शून्य का लाभ उठाकर खुरासान पर विजय प्राप्त करना चाहता था। खुरासान का व्यापारिक महत्व भी था। करीब तीन लाख की सेना का गठन किया गया एवं इस पर अत्यधिक धन खर्च किया गया। दुर्भाग्यवश मध्य एशिया की राजनीति में आए परिवर्तनों को देखते हुए यह योजना त्याग दी गई। सेना भंग कर दी गई। इससे सुल्तान की प्रतिष्ठा तो घटी ही, धन का भी अपव्यय भी हुआ। फलतः अशांति बढ़ी और विद्रोह भी आरंभ हो गए। खुरासान के ही समान सुल्तान की कराचिल योजना भी निरर्थक हो गई।

(5) अकाल एवं राहत कार्य :→

मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में साम्राज्य के विभिन्न भागों - दोआब दक्षिण भारत, गुजरात में भयंकर अकाल पड़ा। दिल्ली और निकटवर्ती क्षेत्रों में प्लेग की महामारी भी फैल गई जिसमें हजारों व्यक्तियों की मृत्यु हुई। अतः इन्हें राहत पहुँचाने की व्यवस्था

Scanned with CamScanner

सुल्तान ने की। इस उद्देश्य से अकालग्रस्त क्षेत्रों में लगान वसूली रोक दी गई लगान की राशि घटा दी गई एवं किसानों को आर्थिक सहायता दी गई। अनाज एवं अन्य आवश्यक सामान जनता में वितरित किए गए। पानी की व्यवस्था के लिए कुएं एवं नहरें खुदवाई गईं। इससे जनसाधारण को कुछ राहत तो मिली परंतु, अकाल एवं महामारी के प्रकोपों ने अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।

इस प्रकार मुहम्मद-बिन-तुगलक की सभी नवीन योजनाएँ विफल हो गईं। इससे सुल्तान की साख एवं प्रतिष्ठा नष्ट हो गई। विघटनकारी तत्व सक्रिय हो गए और जगह-जगह विद्रोह आरंभ हो गए जिन्हें सुल्तान पूरी तरह नहीं दबा सका। सुल्तान की नवीन योजनाएँ बुरी नहीं थीं, बल्कि इन्हें बुरे ढंग से प्रयोजित किया गया। सुल्तान ने इन योजनाओं के क्रियान्वयन पर पूरा ध्यान भी नहीं दिया। राजकर्मचारियों में अनुभवहीनता, उनकी बेईमानी भी योजनाओं की विफलता के लिए उत्तरदायी बनीं।

—x—

Scanned with CamScanner